Energy Crisis in India

किसी भी देश का सामाजिक और आर्थिक विकास वहाँ के ऊर्जा संसाधनों के विकास से सम्बद्ध होता है।
यह कहा जाए कि सामाजिक, आर्थिक विकास और ऊर्जा का विकास किसी देश की उन्नति के सम्बन्ध में एक-दूसरे के पर्याय है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।
भारत अपनी 90% ऊर्जा सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति कोयला, खनिज तेल तथा प्राकृतिक गैस जैसे परम्परागत ऊर्जा स्त्रोतों से कर रहा है, परम्परागत ऊर्जा स्त्रोतों के भण्डार अत्यधिक सीमित है।
भारत में तीव्र गति से जनसंख्या वृद्धि के कारण ऊर्जा की बढ़ती माँग, ऊर्जा के परम्परागत स्त्रोतों के घटते बाजार ने देश के सम्मुख भावी ऊर्जा संकट की समस्या खड़ी कर दी है।
देश में वर्ष 1950-51 से लेकर 2014-15 तक की अवधि में विद्युत उत्पादन में 82 गुना वृद्धि हुई है।
कोयला उत्पादन में दस गुनी, कच्चे तेल की उत्पादन में 106 गुना वृद्धि हुई है, ऊर्जा की कमी बनी हुई है।
त्वरित उपाय के रूप में यह निश्चित किया गया कि पेट्रोलियम उत्पादों की खपत पर एवं अनावश्यक उपयोग पर अंकुश लगाया जाए तथा पेट्रोलियम उत्पादों के स्थान पर ऊर्जा की दूसरी

Scanned with CamScanner

वस्तुओं के उपयोग की सम्भावनाओं का पता लगाया जाए।
परिणाम स्वरूप वर्ष 1974 में देश में 'ऊर्जा मंत्रालय' की स्थापना की गई और एक लम्बी अवधि के लिए ऊर्जा नीति तैयार की गई।

ऊर्जा संकट :—>

जैसे-जैसे मनुष्य विकास करता जा रहा है, वैसे-वैसे उसकी ऊर्जा सम्बन्धी आवश्यकताओं में वृद्धि होती जा रही है। ऊर्जा के विभिन्न साधनों का इतना तीव्र गति से उपयोग किया गया है कि इनके अभाव की स्थिति पैदा हो गई है।
देश के अस्तित्व एवं आर्थिक विकास के लिए एक चुनौती है।
संकट का समाधान त्वरित नहीं खोजा गया तो देश का आर्थिक विकास अवरुद्ध हो जाएगा।
'ऊर्जा संकट' से केवल मात्रात्मक ही नहीं वरन् मूल्यांकन और वितरणात्मक समस्याएँ भी पैदा हो गई हैं।
भारत में ऊर्जा संकट के कारण :—>

(1) खनिज तेल एवं पेट्रोलियम उत्पादों का बढ़ता हुआ प्रयोग :—>

कोयले की तुलना में तेल से ऊर्जा ग्रहण करना अधिक सुगम होता है। तेल का प्रयोग निरन्तर बढ़ता जा रहा है।
देश में रेल यातायात का अधिकांश भाग

तथा अधिकांश उत्पादन जो कोयला शक्ति से चल सकता था, तेल पर आश्रित हो गया है रेलवे इंजनो का डीजलीकरण, नेफ्था पर आधारित उर्वरक कारखानो की स्थापित करना तथा अनेक कारखानो की भट्टियो को कोयले की अपेक्षा तेल से गर्म करना प्रवृत्ति के कुछ उदाहरण है।

2. रेल यातायात मे कठिनाइयां :→

गत कुछ वर्षों मे अनेक बार तापीय विद्युत गृहो के समक्ष कोयले के अभाव की समस्या उत्पन्न हुई। रेलवे हड़ताल, कोयले के लिए मालगाड़ी के डिब्बो का अभाव और कोयला उत्पादन के लक्ष्यों की पूर्ति न होना।

3. जल विद्युत के लक्ष्यों का प्राप्त न होना:→

शक्ति का सबसे सस्ता साधन जल विद्युत है, पर कभी पानी की समस्या और कभी किसी तकनीकी समस्याओ के कारण हम जल विद्युत के लक्ष्यो को पूर्णतया प्राप्त नही कर पाते परिणाम स्वरूप ऊर्जा संकट निरन्तर बना रहता है।

4. परमाणु शक्ति के विकास की धीमी गति:→

देश मे परमाणु शक्ति के विकास के लिए जो योजनाएँ तैयार की गई थी उनको पूर्ण रूप से मूर्त रूप नही दिया जा सका है। परमाणु शक्ति केन्द्रो द्वारा उत्पादित ऊर्जा लक्ष्यो को प्राप्त नही किया जा सका है।

Scanned with CamScanner

देश की बढ़ती हुई आवश्यकताओं के अनुरूप परमाणु शक्ति का विकास भी नहीं किया जा सका।

5. तेल निर्यातक देशों द्वारा तेल के मूल्यों में निरन्तर वृद्धि करना :→

भारत को लगभग 5% तेल अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आयात करना पड़ता है।

कुछ वर्षों में तेल निर्यातक देशों द्वारा तेल के मूल्यों में निरन्तर वृद्धि की गति रही है। अतः समस्या गम्भीर हो गई है।

Scanned with CamScanner